मेरा भालू का डर

कुछ लोगों को डर लगता है मकोड़ियों से, साँप से, चमगादड़ से या ऐसे कोई जानवर से। मुझे डर लगता था भालू से। जब मैं छोटी थी मैं सोचती थी कि अगर मैं वक्त पर काम नहीं करूँ तो भालू मुझे आकर खा जाएगा। जब मैं सात वर्ष की थी तौ मैंने एक कहानी पड़ी थी। उसमें एक लड़की थी। वह कैम्पिंग के लिए गई थी। तब उसे एक भालू दिखाई पड़ता है। वह बहुत डर जाती है। वह हिम्मत से काम लेती है और सोचती है कि अगर वह जल्दी ही कुछ नहीं करती है तो भालू उसे खा जाएगा। उसे याद आता है कि उसकी विज्ञान की अध्यापिका ने उसे बताया था कि भालू मरे हुए प्राणियों को नहीं खाते हैं। उसने मरने का नाटक किया और भालू चला गया। अब मुझे लगता है कि अगर भालू दिखाई दे तो मैं मरने का नाटक करूँगी।

–इसाबेल गुप्ता, पाँचवीं, आर्किड स्कूल पुणे, महाराष्ट्र

–काशिफ मालवत, छठी, अमरेली, गुजरात

मेरी छाया

मेरी एक छोटी-सी छाया
बिलकुल मेरे जैसी काया
ऐड़ी से चोटी तक ऐसी
दिखती बिलकुल मेरे जैसी

–प्रमोद, चौथी, तातियागंज, कानपुर, उ. प्र.

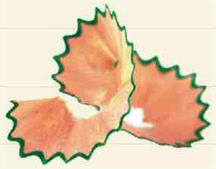

–मोनी मीना, 12 साल, सवाई माधोपुर, राजस्थान

–सुनील प्रजापति, तीसरी, बलदेवगढ़, मध्यप्रदेश

मेरी प्यारी दोस्त

एक दिन मेरी दोस्त बियालू ने कहा, "चलो जुन्ती वीडियो हॉल चलते हैं।" जब हम वहाँ बैठे थे मुझे चक्कर आने लगे। और अचानक मैं अपनी सीट से गिर पड़ी। मेरे अंकल जो मेरे बाजू में ही बैठे थे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, "अरे कोई मदद करो, पानी लाओ, पानी।" इसके बाद का मुझे कुछ नहीं पता।

जब मैंने अपनी आँखें खोलीं तो मैंने देखा कि मेरे दोस्त, मम्मी-पापा व डॉक्टर मुझे घेरे खड़े हैं। और मैं अस्पताल में हूँ।

कुछ दिनों बाद मैं ठीक हो गई और घर आ गई। तब मेरे दोस्तों ने मुझे बताया कि उस दिन क्या हुआ था।

जब मैं गिर पड़ी तो बियालू दौड़कर बाहर गई और रोने लगी कि क्या वो पानी के छींटे मारने से ठीक हो जाएगी। उसने मेरे भाई को बुलाया और फिर वो मुझे अस्पताल ले गए। डॉक्टर ने बताया कि मुझे टाईफाइड और मलेरिया हो गया है और मुझे अस्पताल में भर्ती कर लिया।

मैं अपनी दोस्त बियालू का शुक्रिया अदा करती हूँ कि उसने मेरी मदद की।

–जुन्ती करी, आठवीं, वेकरो, अरुणाचल प्रदेश

आज सुबह मम्मी ने...

घर के बाहर चिड़ियों के लिए पानी भरकर रखा और पापा ने खूब सारे चावल के दाने डाले। जब मैं दोपहर में मम्मी के साथ घर में बैठा था तब हमने देखा कि एक छोटा-सा गौरैया का बच्चा चीं-चीं आवाज़ कर रहा था। हमने देखा उसकी माँ उसको चोंच से दाना खिला रही थी। फिर मैं चुपके से देखने लगा। उसकी माँ मुँह में एक दाना लाती। बच्चे के मुँह में दाना खिलाती और फर्र से उड़ जाती। कभी वह पानी पीता कभी दाना खाता। मैंने मम्मी से कहा, "मुझे उसके पास जाना है।" मम्मी ने मना किया और कहा, "तुम्हारे पास जाने से वे उड़ जाएँगें।" मेरा मन नहीं माना। जैसे ही मैं पास गया वे दोनों फर्र से चीं-चीं-चीं करते उड़ गए। मुझे बहुत बुरा लगा। पर थोड़ी ही देर में वो फिर से दरवाज़े पर चीं-चीं करने लगे। मैं अन्दर गया और मम्मी को बुलाकर कहा "वो बच्चा फिर से खाना खाने आ गया।" अब मैं दूर से ही देख रहा था।

–ईशान निगम, चौथी, भोपाल